Q No. द्वितीयक आँकड़े (Secondary Data) से आप क्या समझते हैं? इसके लाभ एवं सीमाओं की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

शोध (Research) एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी समस्या, घटना या विषय का गहन अध्ययन करके नए तथ्यों की खोज की जाती है। किसी भी शोध की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रयुक्त आँकड़े (Data) कितने विश्वसनीय, सटीक, अद्यतन एवं उद्देश्य के अनुरूप हैं। आँकड़े ही शोध की आधारशिला होते हैं। यदि आँकड़े सही नहीं होंगे, तो शोध के निष्कर्ष भी सही नहीं होंगे।

शोध में प्रयुक्त आँकड़ों को सामान्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है–प्राथमिक आँकड़े (Primary Data) तथा द्वितीयक आँकड़े (Secondary Data)। वर्तमान समय में शोध कार्यों की बढ़ती संख्या तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण द्वितीयक आँकड़ों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा बड़ी मात्रा में आँकड़े प्रकाशित किए जाते हैं, जिनका उपयोग शोधकर्ता अपने अध्ययन में करते हैं। इसलिए द्वितीयक आँकड़े शोध कार्य को अधिक प्रभावी, किफायती तथा समयबद्ध बनाते हैं।

द्वितीयक आँकड़ों का अर्थ (Meaning of Secondary Data)

द्वितीयक आँकड़े वे आँकड़े हैं जिन्हें किसी व्यक्ति, संस्था, संगठन या सरकारी विभाग द्वारा पहले से किसी अन्य उद्देश्य के लिए एकत्रित, वर्गीकृत, विश्लेषित तथा प्रकाशित किया जा चुका होता है। बाद में कोई अन्य शोधकर्ता इन्हीं आँकड़ों का उपयोग अपने शोध के उद्देश्य से करता है। चूँकि इन आँकड़ों का संग्रह वर्तमान शोधकर्ता द्वारा नहीं किया जाता, इसलिए इन्हें द्वितीयक आँकड़े कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में, जो आँकड़े पहले से उपलब्ध हों और जिनका उपयोग किसी अन्य शोधकर्ता द्वारा पुनः किया जाए, वे द्वितीयक आँकड़े कहलाते हैं।

परिभाषाएँ (Definitions)

पी. वी. यंग (P. V. Young) के अनुसार–

"द्वितीयक आँकड़े वे आँकड़े हैं जिन्हें पहले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा एकत्रित एवं उपयोग किया गया हो तथा बाद में किसी अन्य शोधकर्ता द्वारा पुनः उपयोग में लाया जाए।"

गुड एवं हट्ट (Goode and Hatt) के अनुसार–

"द्वितीयक आँकड़े वे हैं जो पहले से किसी उद्देश्य के लिए संकलित किए जा चुके हों और बाद में किसी अन्य अध्ययन में प्रयुक्त किए जाएँ।"

द्वितीयक आँकड़ों की विशेषताएँ (Characteristics of Secondary Data)

ये पहले से उपलब्ध होते हैं।

इनका संग्रह किसी अन्य उद्देश्य से किया गया होता है।

इनका उपयोग पुनः अन्य शोधकर्ता द्वारा किया जाता है।

ये प्रकाशित या अप्रकाशित दोनों रूपों में उपलब्ध हो सकते हैं।

इनकी प्राप्ति अपेक्षाकृत सरल एवं कम खर्चीली होती है।

इनका उपयोग बड़े पैमाने पर शोध एवं नीति निर्माण में किया जाता है।

इनकी विश्वसनीयता स्रोत पर निर्भर करती है।

इनका उपयोग ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन में अधिक किया जाता है।

द्वितीयक आँकड़ों के स्रोत (Sources of Secondary Data)

(क) प्रकाशित स्रोत (Published Sources)

- भारत की जनगणना (Census of India)
- आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey)
- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)
- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की रिपोर्टें
- नीति आयोग (NITI Aayog) की रिपोर्टें
- विभिन्न मंत्रालयों के प्रकाशन
- विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शोध-पत्र
- पुस्तकें एवं संदर्भ ग्रंथ
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाएँ
- समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ
- कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट
- संयुक्त राष्ट्र (UN), विश्व बैंक (World Bank), IMF, WHO आदि की रिपोर्टें
- इंटरनेट एवं ऑनलाइन डेटाबेस

(ख) अप्रकाशित स्रोत (Unpublished Sources)

- विश्वविद्यालयों के अप्रकाशित शोध-प्रबंध
- निजी संस्थानों के अभिलेख
- सरकारी कार्यालयों के रिकॉर्ड
- व्यक्तिगत डायरी एवं पत्र
- निजी सर्वेक्षण रिपोर्ट
- संस्थागत अभिलेख एवं दस्तावेज
- द्वितीयक आँकड़ों के लाभ (Advantages of Secondary Data)

1. समय की बचत

द्वितीयक आँकड़े पहले से उपलब्ध होने के कारण शोधकर्ता को स्वयं आँकड़े एकत्रित नहीं करने पड़ते। इससे शोध कार्य कम समय में पूरा हो जाता है।

2. कम लागत

प्राथमिक आँकड़ों की अपेक्षा द्वितीयक आँकड़ों को प्राप्त करने में बहुत कम धन खर्च होता है। अनेक स्रोत निःशुल्क भी उपलब्ध होते हैं।

3. श्रम की बचत

शोधकर्ता को प्रश्नावली तैयार करने, साक्षात्कार लेने या सर्वेक्षण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

4. सरल उपलब्धता

आज के डिजिटल युग में सरकारी वेबसाइटों, पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों एवं ऑनलाइन डेटाबेस से आँकड़े आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

5. व्यापक क्षेत्र का अध्ययन

इन आँकड़ों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े क्षेत्र, बड़ी जनसंख्या तथा लंबे समय की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

6. तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी

शोधकर्ता विभिन्न वर्षों, राज्यों, देशों एवं क्षेत्रों के आँकड़ों की तुलना आसानी से कर सकता है।

7. शोध की पृष्ठभूमि तैयार करने में सहायक

द्वितीयक आँकड़े शोधकर्ता को विषय की प्रारंभिक जानकारी प्रदान करते हैं तथा शोध समस्या एवं परिकल्पना बनाने में सहायता करते हैं।

8. ऐतिहासिक अध्ययन के लिए उपयोगी

इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं जनसंख्या अध्ययन जैसे विषयों में पुराने आँकड़ों का विशेष महत्व होता है।

9. नीति निर्माण में सहायक

सरकारें एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ विकास योजनाएँ, आर्थिक नीतियाँ तथा सामाजिक कार्यक्रम तैयार करने के लिए द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग करती हैं।

10. विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त

यदि आँकड़े सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों या प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हों, तो उनकी विश्वसनीयता अधिक होती है।

11. भविष्य के शोध में उपयोगी

एक बार संकलित आँकड़े अनेक शोधकर्ताओं द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिए पुनः उपयोग किए जा सकते हैं।

12. बड़े नमूने (Large Sample) का लाभ

अधिकांश सरकारी सर्वेक्षण बहुत बड़े नमूने पर आधारित होते हैं, जिससे निष्कर्ष अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण होते हैं।

द्वितीयक आँकड़ों की सीमाएँ (Limitations of Secondary Data)

1. शोध उद्देश्य के अनुरूप न होना

आँकड़े किसी अन्य उद्देश्य से संकलित किए गए होते हैं, इसलिए वे वर्तमान शोध की आवश्यकताओं को पूर्णतः पूरा नहीं कर सकते।

2. पुराने आँकड़े होना

कई बार आँकड़े वर्षों पुराने होते हैं, जिससे वर्तमान परिस्थितियों का सही चित्र प्राप्त नहीं होता।

3. विश्वसनीयता की समस्या

यदि आँकड़े किसी अविश्वसनीय स्रोत से लिए गए हों, तो उनमें त्रुटियाँ, पक्षपात या अपूर्णता हो सकती है।

4. अपूर्ण जानकारी

शोधकर्ता को आवश्यक सभी तथ्य उपलब्ध नहीं हो पाते, जिससे अध्ययन प्रभावित हो सकता है।

5. संग्रहण विधि की जानकारी का अभाव

अक्सर यह ज्ञात नहीं होता कि आँकड़े किस विधि से संकलित किए गए थे, इसलिए उनकी गुणवत्ता का सही मूल्यांकन कठिन होता है।

6. नियंत्रण का अभाव

शोधकर्ता आँकड़ों के संग्रह, वर्गीकरण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया पर कोई नियंत्रण नहीं रखता।

7. पक्षपात (Bias) की संभावना

आँकड़े एकत्र करने वाली संस्था या व्यक्ति की सोच, नीति या उद्देश्य आँकड़ों को प्रभावित कर सकते हैं।

8. सत्यापन में कठिनाई

पुराने या प्रकाशित आँकड़ों की पुनः जाँच करना कई बार संभव नहीं होता।

9. अद्यतन (Updated) न होना

तेजी से बदलती सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में पुराने आँकड़े कम उपयोगी हो जाते हैं।

10. सभी विषयों के लिए उपलब्ध नहीं

- कुछ नए या विशेष शोध विषयों पर आवश्यक द्वितीयक आँकड़े उपलब्ध नहीं होते।
- द्वितीयक आँकड़ों का शोध में महत्व
- शोध की प्रारम्भिक योजना बनाने में सहायता।
- शोध समस्या को स्पष्ट करने में सहायक।
- परिकल्पना (Hypothesis) निर्माण में उपयोगी।
- प्राथमिक आँकड़ों की तुलना एवं सत्यापन में सहायक।
- नीति निर्माण एवं निर्णय लेने में उपयोगी।
- सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के विश्लेषण में सहायक।
- समय, श्रम एवं धन की बचत।
- ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।

निष्कर्ष

द्वितीयक आँकड़े शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। ये समय, धन और श्रम की बचत करते हुए शोधकर्ता को व्यापक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं। सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा प्रशासनिक अनुसंधान में इनका व्यापक उपयोग किया जाता है। यद्यपि इनकी कुछ सीमाएँ हैं, जैसे कि पुराने होना, उद्देश्य के अनुरूप न होना तथा विश्वसनीयता की समस्या, फिर भी यदि शोधकर्ता स्रोतों का सावधानीपूर्वक चयन करे और आँकड़ों की प्रामाणिकता की जाँच करे, तो द्वितीयक आँकड़े अत्यंत उपयोगी एवं प्रभावी सिद्ध होते हैं। इसलिए किसी भी शोध में इनका विवेकपूर्ण एवं आलोचनात्मक उपयोग करना आवश्यक है।